रविवार 18 जुलाई, 2021

***विषय* — जिंदगी**

***स्वर्ण पाठ:* रोमियो 6 : 23**

"परमेश्वर का वरदान हमारे प्रभु मसीह यीशु में अनन्त जीवन है॥"

उत्तरदायी अध्ययन: उत्पत्ति 5 : 1, 2, 21-24

1 आदम की वंशावली यह है। जब परमेश्वर ने मनुष्य की सृष्टि की तब अपने ही स्वरूप में उसको बनाया;
2 उसने नर और नारी करके मनुष्यों की सृष्टि की और उन्हें आशीष दी, और उनकी सृष्टि के दिन उनका नाम आदम रखा।
21 जब हनोक पैंसठ वर्ष का हुआ, तब उसने मतूशेलह को जन्म दिया।
22 और मतूशेलह के जन्म के पश्चात हनोक तीन सौ वर्ष तक परमेश्वर के साथ साथ चलता रहा, और उसके और भी बेटे बेटियां उत्पन्न हुई।
23 और हनोक की कुल अवस्था तीन सौ पैंसठ वर्ष की हुई।
24 और हनोक परमेश्वर के साथ साथ चलता था; फिर वह लोप हो गया क्योंकि परमेश्वर ने उसे उठा लिया।

पाठ उपदेश

बाइबल

1. 2 राजा 2 : 1-12

1 जब यहोवा एलिय्याह को बवंडर के द्वारा स्वर्ग में उठा लेने को था, तब एलिय्याह और एलीशा दोनों संग संग गिलगाल से चले।
2 एलिय्याह ने एलीशा से कहा, यहोवा मुझे बेतेल तक भेजता है इसलिये तू यहीं ठहरा रह। एलीशा ने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का; इसलिये वे बेतेल को चले गए।
3 और बेतेलवासी भविष्यद्वक्ताओं के चेले एलीशा के पास आकर कहने लगे, क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है? उसने कहा, हां, मुझे भी यह मालूम है, तुम चुप रहो।
4 और एलिय्याह ने उस से कहा, हे एलीशा, यहोवा मुझे यरीहो को भेजता है; इसलिये तू यहीं ठहरा रह: उसने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का; सो वे यरीहो को आए।
5 और यरीहोवासी भविष्यद्वक्ताओं के चेले एलीशा के पास आकर कहने लगे, क्या तुझे मालूम है कि आज यहोवा तेरे स्वामी को तेरे ऊपर से उठा लेने पर है? उसने उत्तर दिया, हां मुझे भी मालूम है, तुम चुप रहो।

इस बाइबल पाठ को प्लेनफील्ड क्रिश्चियन साइंस चर्च, इंडिपेंडेंट द्वारा तैयार किया गया था। यह किंग जेम्स बाइबल से स्क्रिप्चरल कोटेशन से बना है और मैरीक बकरी एड्डी ने क्रिश्चियन साइंस पाठ्यपुस्तक विज्ञान और स्वास्थ्य से कुंजी के साथ शास्त्र के लिए सहसंबद्ध मार्ग लिया है।

6 फिर एलिय्याह ने उस से कहा, यहोवा मुझे यरदन तक भेजता है, सो तू यहीं ठहरा रह; उसने कहा, यहोवा के और तेरे जीवन की शपथ मैं तुझे नहीं छोड़ने का; सो वे दोनों आगे चले।
7 और भविष्यद्वक्ताओं के चेलों में से पचास जन जा कर उनके साम्हने दूर खड़े हुए, और वे दोनों यरदन के तीर खड़े हुए।
8 तब एलिय्याह ने अपनी चद्दर पकड़ कर ऐंठ ली, और जल पर मारा, तब वह इधर उधर दो भाग हो गया; और वे दोनों स्थल ही स्थल पार उतर गए।
9 उनके पार पहुंचने पर एलिय्याह ने एलीशा से कहा, उस से पहिले कि मैं तेरे पास से उठा लिये जाऊं जो कुछ तू चाहे कि मैं तेरे लिये करूं वह मांग; एलीशा ने कहा, तुझ में जो आत्मा है, उसका दूना भाग मुझे मिल जाए।
10 एलिय्याह ने कहा, तू ने कठिन बात मांगी है, तौभी यदि तू मुझे उठा लिये जाने के बाद देखने पाए तो तेरे लिये ऐसा ही होगा; नहीं तो न होगा।
11 वे चलते चलते बातें कर रहे थे, कि अचानक एक अग्नि मय रथ और अग्निमय घोड़ों ने उन को अलग अलग किया, और एलिय्याह बवंडर में हो कर स्वर्ग पर चढ़ गया।
12 और उसे एलीशा देखता और पुकारता रहा, हाय मेरे पिता! हाय मेरे पिता! हाय इस्राएल के रथ और सवारो! जब वह उसको फिर देख न पड़ा, तब उसने अपने वस्त्र पाड़े और फाड़कर दो भाग कर दिए।

2. यूहन्ना 11 : 1, 4 (से *2nd* ,), 11 (हमारी)-15, 17, 32-34, 38-44

1 मरियम और उस की बहिन मारथा के गांव बैतनिय्याह का लाजर नाम एक मनुष्य बीमार था।
4 यह सुनकर यीशु ने कहा।
11 कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूं।
12 तब चेलों ने उस से कहा, हे प्रभु, यदि वह सो गया है, तो बच जाएगा।
13 यीशु ने तो उस की मृत्यु के विषय में कहा था: परन्तु वे समझे कि उस ने नींद से सो जाने के विषय में कहा।
14 तब यीशु ने उन से साफ कह दिया, कि लाजर मर गया है।
15 और मैं तुम्हारे कारण आनन्दित हूं कि मैं वहां न था जिस से तुम विश्वास करो, परन्तु अब आओ, हम उसके पास चलें।
17 सो यीशु को आकर यह मालूम हुआ कि उसे कब्र में रखे चार दिन हो चुके हैं।
32 जब मरियम वहां पहुंची जहां यीशु था, तो उसे देखते ही उसके पांवों पर गिर के कहा, हे प्रभु, यदि तू यहां होता तो मेरा भाई न मरता।
33 जब यीशु न उस को और उन यहूदियों को जो उसके साथ आए थे रोते हुए देखा, तो आत्मा में बहुत ही उदास हुआ, और घबरा कर कहा, तुम ने उसे कहां रखा है?
34 उन्होंने उस से कहा, हे प्रभु, चलकर देख ले।
38 यीशु मन में फिर बहुत ही उदास होकर कब्र पर आया, वह एक गुफा थी, और एक पत्थर उस पर धरा था।
39 यीशु ने कहा; पत्थर को उठाओ: उस मरे हुए की बहिन मारथा उस से कहने लगी, हे प्रभु, उस में से अब तो दुर्गंध आती है क्योंकि उसे मरे चार दिन हो गए।
40 यीशु ने उस से कहा, क्या मैं ने तुझ से न कहा था कि यदि तू विश्वास करेगी, तो परमेश्वर की महिमा को देखेगी।
41 तब उन्होंने उस पत्थर को हटाया, फिर यीशु ने आंखें उठाकर कहा, हे पिता, मैं तेरा धन्यवाद करता हूं कि तू ने मेरी सुन ली है।

42 और मै जानता था, कि तू सदा मेरी सुनता है, परन्तु जो भीड़ आस पास खड़ी है, उन के कारण मैं ने यह कहा, जिस से कि वे विश्वास करें, कि तू ने मुझे भेजा है।
43 यह कहकर उस ने बड़े शब्द से पुकारा, कि हे लाजर, निकल आ।
44 जो मर गया था, वह कफन से हाथ पांव बन्धे हुए निकल आया और उसका मुंह अंगोछे से लिपटा हुआ तें यीशु ने उन से कहा, उसे खोलकर जाने दो॥

3. यूहन्ना 3 : 16

16 क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उस ने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे, वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।

4. यूहन्ना 17 : 1-3

1 यीशु ने ये बातें कहीं और अपनी आंखे आकाश की ओर उठाकर कहा, हे पिता, वह घड़ी आ पहुंची, अपने पुत्र की महिमा कर, कि पुत्र भी तेरी महिमा करे।
2 क्योंकि तू ने उस को सब प्राणियों पर अधिकार दिया, कि जिन्हें तू ने उस को दिया है, उन सब को वह अनन्त जीवन दे।
3 और अनन्त जीवन यह है, कि वे तुझ अद्वैत सच्चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जाने।

5. 2 कुरिन्थियों 9 : 15

15 परमेश्वर को उसके उस दान के लिये जो वर्णन से बाहर है, धन्यवाद हो॥

विज्ञान और स्वास्थ्य

1. 246 : 27-31

जीवन शाश्वत है। हमें इसका पता लगाना चाहिए, और इसके बाद प्रदर्शन शुरू करना चाहिए। जीवन और अच्छाई अमर है। आइए फिर हम उम्र और तुषार के बजाय अपने अस्तित्व के विचारों को प्रेम, ताजगी और निरंतरता में आकार दें।

2. 72 : 13-16

नश्वर विश्वास (जीवन की भौतिक भावना) और अमर सत्य (आध्यात्मिक भावना) तारे और गेहूं हैं, जो प्रगति से एकजुट नहीं हैं, बल्कि अलग हो गए हैं।

3. 14 : 25-30

भौतिक समझ के विश्वास और सपने से पूरी तरह से अलग, आध्यात्मिक समझ और पूरी पृथ्वी पर मनुष्य के प्रभुत्व की चेतना को प्रकट करके, जीवन दिव्य है। यह समझ त्रुटि निकालती है और बीमारों को चंगा करता है, और इसके साथ आप "धिकारी की नान" बोल सकते हैं।

4. 258 : 25-5

मनुष्यों में आध्यात्मिक व्यक्ति और उसके विचार की अनंत सीमा का बहुत ही अपूर्ण अर्थ है। अनन्त जीवन उसी का है। अनंत काल तक ईश्वर की सरकार के तहत, कभी पैदा नहीं हुआ और कभी नहीं मरना मनुष्य के लिए, उसकी उच्च संपत्ति से गिरना असंभव था।

आध्यात्मिक अर्थों के माध्यम से आप देवत्व के हृदय को समझ सकते हैं, और इस तरह विज्ञान में सामान्य शब्द आदमी को समझना शुरू कर सकते हैं। मनुष्य देवता में लीन नहीं है, और मनुष्य अपने व्यक्तित्व को नहीं खो सकता, क्योंकि वह शाश्वत जीवन को दर्शाता है; न ही वह एक पृथक, एकान्त विचार है, क्योंकि वह अनंत मन, सभी पदार्थों के योग का प्रतिनिधित्व करता है।

5. 245 : 32-26

अनंत न कभी शुरू हुआ और न कभी खत्म होगा। मन और उसके स्वरूपों का सत्यानाश कभी नहीं हो सकता। मनुष्य एक पेंडुलम नहीं है, जो बुराई और भलाई, खुशी और दुःख, बीमारी और स्वास्थ्य, जीवन और मृत्यु के बीच झूल रहा है। जीवन और उसके संकायों को कैलेंडरों द्वारा मापा नहीं जाता है। सही और अमर उनके निर्माता की शाश्वत समानता है। मनुष्य किसी भी तरह से अपूर्णता से उठने वाले पदार्थ के कीटाणु से नहीं है और आत्मा को उसके मूल से ऊपर पहुंचाने का प्रयास कर रहा है। धारा अपने स्रोत से ऊपर नहीं उठती है।

सौर वर्षों से जीवन का माप युवाओं को लूटता है और उम्र के लिए कुरूपता देता है। पुण्य का उज्ज्वल सूर्य और होने के साथ सत्य सह-अस्तित्व। घटता हुआ सूरज उसकी शाश्वत दोपहर है, जो एक गिरते सूरज से अनिच्छुक है। भौतिक और भौतिक के रूप में, सौंदर्य की क्षणिक भावना फीकी पड़ जाती है, आत्मा की चमक उज्ज्वल और अपूर्ण चमक के साथ उत्कीर्ण भावना पर भोर होनी चाहिए।

उम्र पर कभी ध्यान न दें। कालानुक्रमिक डेटा हमेशा के लिए विशाल का हिस्सा नहीं हैं। जन्म और मृत्यु के समय-सारणी मर्दानगी और नारीत्व के खिलाफ बहुत सारे षड्यंत्र हैं। उस अच्छे और सुंदर सभी को मापने और सीमित करने की त्रुटि को छोड़कर, आदमी थ्रीस्कोर वर्ष और दस से अधिक का आनंद ले सकता है और अभी भी अपनी ताक़त, ताजगी और वादे को बनाए रखेगा। अमर मन द्वारा शासित मनुष्य हमेशा सुंदर और भव्य होता है। प्रत्येक सफल वर्ष ज्ञान, सौंदर्य और पवित्रता को प्रकट करता है।

6. 151 : 18-21

भय और उसके कार्यों को कभी रोका नहीं जा सकता। रक्त, हृदय, फेफड़े, मस्तिष्क का जीवन, ईश्वर से कोई लेना-देना नहीं है। वास्तविक मनुष्य का प्रत्येक कार्य ईश्वरीय मन द्वारा संचालित होता है।

7. 264 : 15-19

जब हम महसूस करते हैं कि जीवन आत्मा है, तो कभी भी भौतिकता में नहीं, यह समझ ईश्वर में, अच्छी, और किसी अन्य चेतना की आवश्यकता को खोजने के द्वारा, आत्म-पूर्णता में विस्तारित हो जाएगी।

8. 75 : 12-16

यीशु ने लाजर के बारे में कहा: "कि हमारा मित्र लाजर सो गया है, परन्तु मैं उसे जगाने जाता हूं।" यीशु ने लाजर को इस समझ के साथ बहाल किया कि लाजर की मृत्यु कभी नहीं हुई थी, न कि इस बात से कि उसका शरीर मर गया था और फिर दोबारा जीवित हो गया था।

9. 429 : 31-12

यीशु ने कहा (यूहन्ना 8: 51), "यदि कोई व्यक्ति मेरे वचन पर चलेगा, तो वह अनन्त काल तक मृत्यु को न देखेगा।" यह कथन आध्यात्मिक जीवन तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इसमें अस्तित्व की सभी घटनाएं शामिल हैं। यीशु ने यह प्रदर्शित किया, मरते हुए और मृतकों को ऊपर उठाते हुए। नश्वर मन को त्रुटि के साथ भाग लेना चाहिए, अपने कर्मों से खुद को दूर करना चाहिए, और अमर आदर्श मर्दानगी, मसीह आदर्श दिखाई देगा। विश्वास को अपनी सीमाओं को बढ़ाना चाहिए और पदार्थ के बजाय आत्मा पर आराम करके अपने आधार को मजबूत करना चाहिए। जब मनुष्य मृत्यु पर अपना विश्वास छोड़ देता है, तो वह ईश्वर, जीवन और प्रेम की ओर अधिक तेजी से आगे बढ़ेगा। बीमारी और मृत्यु में विश्वास, निश्चित रूप से पाप में विश्वास के रूप में, जीवन और स्वास्थ्य की सही भावना को बंद करने के लिए जाता है। मानव जाति विज्ञान के इस महान तथ्य को कब जगाएगी?

10. 302 : 15 (सामंजस्यपूर्ण)-18

... सामंजस्यपूर्ण और अमर आदमी हमेशा के लिए अस्तित्व में है, और किसी भी जीवन, पदार्थ और बुद्धि के नश्वर भ्रम से परे और हमेशा मौजूद है।

11. 426 : 11-32

यदि मृत्यु में विश्वास तिरोहित हो जाता है, और यह समझ प्राप्त हो जाती है कि मृत्यु नहीं है, तो यह "जीवन का वृक्ष" होगा, जो इसके फलों से जाना जाता है। मनुष्य को अपनी ऊर्जाओं और प्रयासों को नवीनीकृत करना चाहिए, और अपने स्वयं के उद्धार के लिए काम करने की आवश्यकता को सीखते हुए, पाखंड को भी देखना चाहिए। जब यह जान लिया जाता है कि बीमारी जीवन को नष्ट नहीं कर सकती है, और मृत्यु से पाप या बीमारी से मृत्यु को बचाया नहीं जाता है, तो यह समझ जीवन के नएपन में तब्दील हो जाएगी। यह या तो मरने या कब्र से डरने की इच्छा में महारत हासिल करेगा, और इस तरह नश्वर अस्तित्व को नष्ट करने वाले महान भय को नष्ट कर देगा।

मृत्यु में सभी विश्वासों का त्याग और इसके डंक के डर से स्वास्थ्य और नैतिकता के स्तर को अपने वर्तमान उत्थान से बहुत ऊपर उठाया जा सकता है, और हमें ईश्वर में जीवन के प्रति असीम विश्वास के साथ ईसाई धर्म के बैनर को धारण करने में सक्षम करेगा। पाप मौत लाया, और पाप के गायब होने के साथ मौत गायब हो जाएगी। मनुष्य अमर है, और शरीर मर नहीं सकता, क्योंकि पदार्थ के पास समर्पण करने के लिए कोई जीवन नहीं है। पदार्थ, मृत्यु, बीमारी, बीमारी और पाप नाम की मानवीय अवधारणाएँ सभी नष्ट की जा सकती हैं।

12. 428 : 30-4

लेखक ने आशाहीन जैविक बीमारी को ठीक किया है, और जीवन और स्वास्थ्य को भगवान की समझ के माध्यम से उठाया है जो कि मर रहा था। यह मानना कि पाप सर्वशक्तिमान और अनन्त जीवन पर हावी हो सकता है, यह पाप है और इस जीवन को इस समझ के साथ प्रकाश में लाया जाना चाहिए कि कोई मृत्यु नहीं है, साथ ही साथ आत्मा के अन्य अनुग्रह द्वारा भी।

13. 249 : 6-10

आइए हम आत्मा की दिव्य ऊर्जा को महसूस करें, हमें जीवन के नएपन में लाएं और किसी भी नश्वर और भौतिक शक्ति को नष्ट करने में सक्षम न होने को पहचानें। आइए हम आनन्दित हों कि हम दैवीय शक्तियों के अधीन हैं। होने का सही विज्ञान ऐसा है।

दैनिक कर्तव्यों

मैरी बेकर एड्डी द्वारा

दैनिक प्रार्थना

प्रत्येक दिन प्रार्थना करने के लिए इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का कर्तव्य होगा: "तुम्हारा राज्य आओ;" ईश्वरीय सत्य, जीवन और प्रेम के शासन को मुझमें स्थापित करो, और मुझ पर शासन करो; और तेरा वचन सभी मनुष्यों के स्नेह को समृद्ध कर सकता है, और उन पर शासन करो!

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 4

उद्देश्यों और कृत्यों के लिए एक नियम

न तो दुश्मनी और न ही व्यक्तिगत लगाव मदर चर्च के सदस्यों के उद्देश्यों या कृत्यों को लागू करना चाहिए। विज्ञान में, दिव्य प्रेम ही मनुष्य को नियंत्रित करता है; और एक क्रिश्चियन साइंटिस्ट प्यार की मीठी सुविधाओं को दर्शाता है, पाप में डांटने पर, सच्चा भाईचारा, परोपकार और क्षमा में। इस चर्च के सदस्यों को प्रतिदिन ध्यान रखना चाहिए और प्रार्थना को सभी बुराईयों से दूर करने, भविष्यद्वाणी, न्याय करने, निंदा करने, परामर्श देने, प्रभावित करने या गलत तरीके से प्रभावित होने से बचाने के लिए प्रार्थना करनी चाहिए।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 1

कर्तव्य के प्रति सतर्कता

इस चर्च के प्रत्येक सदस्य का यह कर्तव्य होगा कि वह प्रतिदिन आक्रामक मानसिक सुझाव से बचाव करे, और भूलकर भी ईश्वर के प्रति अपने कर्तव्य की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए, अपने नेता और मानव जाति के लिए। उनके कामों से उन्हें आंका जाएगा, — और वह उचित या निंदनीय होगा।

चर्च मैनुअल, लेख VIII, अनुभाग 6